रजिस्ट्री सं० डी०एल०—33004/96 REGD. NO. D.L.—33004/96

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 105] नई दिल्ली, रविवार, फरवरी 18, 1996/माघ 29, 1917
No. 105] NEW DELHI, SUNDAY, FEBRUARY 18, 1996/ MAGHA 29, 1917

जम्मू व कश्मीर कार्य विभाग

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 फरवरी, 1996

का०आ० 131(अ).—जम्मू व कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट (जिसे इसमें इसके पश्चात् जे०के०एल०एफ० कहा गया है) एक ऐसा संगम है जिसका आधार वस्तुतः पाकिस्तान और लंदन में है तथा इसके हमदर्द, समर्थक और एजेन्ट भारत की भूमि पर, विशेषकर जम्मू-कश्मीर में सक्रिय हैं, और—

(i) इसने जम्मू-कश्मीर राज्य को भारत संघ से बिलग करने के अपने उद्देश्य की खुलेआम घोषणा की है, और इस प्रयोजन की प्राप्ति के लिए—

(क) पाकिस्तान की इंटर सर्विसेज इंटेलिजेन्स (आई०एस०आई०) की सहायता से जम्मू व कश्मीर राज्य को स्वतंत्र कराने का लक्ष्य हासिल करने के लिए कश्मीरी युवाओं को जुटाकर, उन्हें विधि द्वारा स्थापित राज्य सरकार के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष तेज करने के लिए उकसा रहा है तथा भारत की सुरक्षा और प्रादेशिक अखण्डता के प्रतिकूल गतिविधियों में संलिप्त है,

(ख) उग्रवादी संगठनों को एकत्रित करके, राज्य को बिलग करने के लिए एक अभियान की अगुवाई कर रहा है,

(ग) जम्मू व कश्मीर राज्य में निर्वाचन आयोजित कराने का विरोध करके लोगों को अपने लोकतांत्रिक और संवैधानिक अधिकारों का प्रयोग करने में बाधा डाल रहा है (यह ग्रुप आत्म निर्णय का अधिकार दिए जाने और विभिन्न उग्रवादी संगठनों के बीच एकता स्थापित करने का लगातार प्रयास कर रहा है),

(घ) इसके अध्यक्ष यासिन मलिक ने एक साक्षात्कार में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश से दिसम्बर, 1995 में एक अपील की थी कि वह इस राज्य को संघ से स्वतंत्र कराने के लिए हस्तक्षेप करें,

(ii) जम्मू व कश्मीर राज्य को भारत संघ से बिलग कराने के अपने प्रयास में यह—

(क) अपहरण, गोलीबारी तथा कर्मचारियों को धमकाने सहित उग्रवादी कार्रवाइयों में संलग्न रहा है और इस ग्रुप के कार्यकर्त्ताओं से भारी मात्रा में शस्त्र और गोलाबारूद बरामद हो रहा है,

(ख) प्रशिक्षण के लिए युवाओं को सीमा पार भेज रहा है,

(ग) सामान्य जन जीवन को अस्त-व्यस्त करने के लिए हड़तालों का आह्वान कर रहा है और निषेधाज्ञा का उल्लंघन करते हुए जलूस निकाल रहा है,

(iii) जे०के०एल०एफ० के क्रिया-कलापों से निषेधाज्ञा का उल्लंघन हो रहा है और इसमें विधि व्यवस्था संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं तथा तारीख 28-7-1994, 31-7-1994, 10-12-1994, 28-1-1995, 22-10-1995 और 24-10-1995 को निषेधाज्ञा का उल्लंघन करते हुए जे०के०एल०एफ० द्वारा जलूस निकाले गए,

(iv) जे०के०एल०एफ० ने 22 अप्रैल, 1994 को बारामूला जिले के सोनाबाड़ी और रॉफियाबाद में सुरक्षा बलों पर आक्रमण की जिम्मेदारी ली है,

(v) जे०के०एल०एफ० ने ध्वंसात्मक क्रिया-कलापों में सम्मिलित होना स्वीकार किया है और तारीख 28 अक्तूबर, 1995 के उर्दू दैनिक "मशीरक" में सुरक्षा बलों पर जे०के०एल०एफ० द्वारा किए गए आक्रमण का ब्यौरा जारी किया,

(vi) जे०के०एल०एफ० ने 14/15 नवम्बर, 1994 की रात को नयी थीड में थीड हारबान के निवासी मोहम्मद अमीन भट्ट के पुत्र आरिफ अमीन का अपहरण किया जिसे बाद में छोड़ दिया।

(vii) जे०के०एल०एफ० से सम्बद्ध उग्रवादियों नें इम्तयाज अहमद उर्फ सजाद परवेज निवासी, छोटा बाजार, श्रीनगर की तारीख 24-11-1994 को हत्या कर दी,

(viii) जे०के०एल०एफ० राष्ट्रहित के प्रतिकूल खुली घोषणाएं करता रहा है जिसका भारत की अखण्डता और सुरक्षा पर गंभीर प्रभाव पड़ता है, जैसे कि—

(क) जे०के०एल०एफ० के अध्यक्ष यासीन मलिक ने तारीख 22 जनवरी, 1995 को "स्टेटमैन" को दिए गए साक्षात्कार में कश्मीर की पूर्ण स्वतंत्रता की मांग को दुहराया,

(ख) जे०के०एल०एफ० के पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के अध्यक्ष अमानुल्ला खान ने भी पाकिस्तानी दैनिक "न्यूज" में मार्च, 1995 में प्रकाशित लेख में जम्मू कश्मीर की जनता की "आजादी" की मांग के बारे में कहा। [इसके पश्चात् उन्होंने कश्मीरी सूचना केन्द्र द्वारा लन्दन से प्रकाशित पत्रिका "कश्मीरी पोस्ट" (मई, 1995) में अपने विचार दोहराए],

(ग) जे०के०एल०एफ० ने राज्य की जनता को यह चेतावनी दी कि वे करों का भुगतान न करें तथा सरकारी कर्मचारियों से अपने सम्पत्ति विवरण प्रस्तुत न करने को कहा।

और केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि पूर्वोक्त कारणों से जे०के०एल०एफ० (जिसके अन्तर्गत भारत के भीतर तथा विदेश में सक्रिय, उसके सदस्य, कार्यकर्त्ता, सशस्त्र ग्रुप हमदर्द तथा स्वंयभू नेता है) एक विधिविरूद्ध संगम है,

अतः, केन्द्रीय सरकार, विधिविरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1967 (1967 को 37) की धारा 3 की उप-धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट, (जे०के०एल०एफ०) जिसके अन्तर्गत भारत के भीतर तथा विदेश में सक्रिय, उसके सदस्य, कार्यकर्त्ता, सशस्त्र ग्रुप, हमदर्द तथा स्वयंभू नेता हैं, को एक विधिविरुद्ध संगम घोषित करती है,

और केन्द्रीय सरकार की यह भी राय है कि सुरक्षा बलों और नागरिक आबादी पर अपने सशस्त्र ग्रुपों द्वारा बिलग होने के उद्देश्य से लगातार किए जा रहे क्रियाकलापों और हिंसा की बार-बार की जा रही कार्रवाईयों और आक्रमणों के कारण, जे०के०एल०एफ० को तत्काल प्रभाव से विधिविरुद्ध संगम घोषित करना आवश्यक है,

अतः, केन्द्रीय सरकार, उक्त धारा की उप-धारा (3) के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए आगे यह निदेश देती है कि यह अधिसूचना किसी ऐसे आदेश के अधीन रहते हुए, जो उक्त अधिनियम की धारा 4 के अधीन किया जाए, राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से प्रभावी होगी।

[फा० सं० 13014/13/95-के० (डी०ओ०-1)]

सी० फुंसोंग, संयुक्त सचिव

Department of Jammu & Kashmir Affairs

NOTIFICATION

New Delhi, the 18th February, 1996

S.O. 131(E).—Whereas the Jammu and Kashmir Liberation Front (hereinafter referred to as JKLF) is an association actually based in Pakistan and London and having sympathisers, supporters and agents on Indian soil, especially in Jammu and Kashmir and—

(i) it has openly declared as its aim secession of the State of Jammu and Kashmir from the Union of India, and to achieve this purpose —

(a) has been mobilising Kashmiri youth with the help of Pak Inter-Services Intelligence, exhorting them to intensify the armed struggle against the State Government established by law to achieve liberation of the State of Jammu and Kashmir and indulging in activities prejudicial to the security and territorial integrity of India;

(b) has been spearheading a campaign for uniting militant outfits, professing secession;

(c) has been opposing holding of elections in the State of Jammu and Kashmir thereby obstructing people from exercising their democratic and constitutional rights (the group has continued to advocate granting of self-determination and unity amongst various militant outfits);

(d) its President, Yasin Malik, in an interview made an appeal to the former US President George Bush in December, 1995 to intervene for liberating the State from the Indian Union;

(ii) it has, in its attempt to cause secession of the State of Jammu and Kashmir from the Union of India,—

(a) indulged in militant acts includng abductions, shootouts and threatening employees and large quantities of arms and ammunition continue to be recovered from the activists of the group;

(b) has been sending youth for training across the border;

(c) has been giving hartal calls to disrupt life and taking out processions in violation of prohibitory orders;

(iii) the activists of JKLF have been violating prohibitory orders and creating law and order situation and on 28-7-94, 31-7-94, 10-12-94, 28-1-95, 22-10-95 and 24-10-95 processions were taken out by JKLF violating prohibitory orders;

(iv) JKLF claimed responsibility for attacks on security forces at Sonawari and Rafiabad in Baramulla district on 22nd April, 1994;

(v) JKLF has been confessing involvement in subversion and issued details of attacks by the JKLF on security forces in Urdu daily 'Mashriq' dated 28th October, 1995;

(vi) JKLF kidnapped one Arif Amin, son of Mohd. Amin Bhat resident of Theed Harwan during the night intervening 14/15 November, 1994 at new Theed, who was subsequently released;

(vii) militants belonging to JKLF killed one Imtiyaz Ahmad @ Sajad Parvez resident of Chotta Bazar, Srinagar on 24th November, 1994;

(viii) the JKLF has been making open pronouncements prejudicial to the interest of the Nation and having serious repercussions for the integrity and security of India, such as the following :

(a) Yasin Malik, President of JKLF, in an interview to 'The Statesman' on January 22, 1995 reiterated the demand for complete independence for Kashmir;

(b) Amanullah Khan, Pakistan Occupied Kashmir—based Chairman of JKLF, also asserted the demand of the people of J&K for 'Azadi' in an article published in March 1995 in the Pakistani daily "News" [subse-

the Kashmir Information Centre];

(c) JKLF warned the people of the State from paying taxes and asked the Government employees not to submit their property statements.

And whereas the Central Government is of the opinion that for the aforesaid reasons the JKLF (including its members, activists, armed groups, sympathisers and self-styled leaders, operating inside India and abroad) is an unlawful association;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (1) of Section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (37 of 1967), the Central Government hereby declares the Jammu and Kashmir Liberation Front (JKLF), including its members, activists, armed groups, sympathisers and self-styled leaders operating inside India and abroad to be an unlawful association

And whereas the Central Government is further of the opinion that because of its continued activities aimed at secession and the repeated acts of violence and attacks by its armed groups on the security forces and on the civilian population, it is necessary to declare the JKLF to be unlawful with immediate effect;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the proviso to Sub-section (3) of the said Section the Central Government directs that this notification shall, subject to any order that may be made under Section 4 of the said Act, have effect from the date of its publication in the Official Gazette.

[F. No. 13014/13/95-K (DO-I)]
C. PHUNSOG, Jt. Secy.

Printed by the Manager, Govt. of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054 . 1996